Prakriti Stotram

शिवेन कृतं प्रकृत्याः स्तोत्रम् (जगदंबा स्तोत्रम्)

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

दक्ष यज्ञ समारोह के समय जब सती ने योगबल से अपने शरीर का त्याग किया था। तब सती के उस प्राणहीन शरीर को देखकर भगवान् शिव सती के वियोग में कभी मूर्च्छित, कभी चेतन होते हुए भांति-भांति से विलाप करने लगे। उनके स्वर्णप्रतिम मृत देह को वक्ष पर धारण करके सप्तद्वीप, लोकालोक पर्वत तथा सप्तसिंधु में भ्रमण करते हुए भारत में शतश्रृंग-गिरि के पास जम्बूद्वीप में निर्जन प्रदेशस्थ अक्षयवट के नीचे नदीतीर पर पंहुचे। वहां से भगवान् शंकर विरहाकुलचित्त होकर पूरे एक वर्ष तक पृथ्वी पर परिभ्रमण करते रहे। सती देवी के अंग-प्रत्यंग जिस-जिस स्थान पर गिरे, वे स्थान कामनाप्रद सिद्ध पीठ हो गये। तदनन्तर शिव ने सती के अवशिष्ट अंगो का संस्कार किया। अस्थियों की माला गूंथकर उसे अपना कण्ठभूषण बना लिया और नित्य सती का शरीर भस्म अपने शरीर पर लगाने लगे। इसके बाद वे निश्चेष्ट से होकर एक वटमूल में पड़ गये।

तब भगवान् विष्णु वहां पधारे और महादेव को गोद में लेकर उन्हें समझाते हुए कहा- जैसे पुरुष की नित्य प्रधानता है, उसी

तरह प्रकृति की भी है। यदि तुम सती को पाना चाहते हो तो प्रकृति का स्तवन करो। तुमने पूर्वकाल में दुर्वासा को प्रसन्नतापूर्वक जिस स्तोत्र का उपदेश दिया था, वह दिव्य है और उसका कण्वशाखा में वर्णन किया गया है। तुम उसी के द्वारा जगदम्बा की आराधना करो। शिव! मेरे आशीर्वाद से तुम्हारे शोक का नाश हो। तुम्हें कल्याण की प्राप्ति हो और तुम्हारे लिये विप्लव का कारण बना हुआ पत्नी के वियोग का यह रोग दूर हो जाये। तदनन्तर महेश्वर ने प्रकृति के स्तवन का कार्य आरम्भ किया।

स्तोत्रम्- महेश्वर उवाच- ब्राह्मि ब्रह्मस्वरूपे त्वं मां प्रसीद सनातनि। परमात्मस्वरूपे च परमानन्दरूपिणी।।

भद्रे भद्रप्रदे दुर्गे दुर्गघ्ने दुर्गनाशिनी। पोतस्वरूपेऽजीर्णे त्वं मां प्रसीद भवार्णवे।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशि सर्वबीजस्वरूपिणी। सर्वाधारे सर्वविद्ये मां प्रसीद जयप्रदे।।

सर्वमंगलरूपे च सर्वमंगलदायिनी। समस्तमंगलाधारे प्रसीद सर्वमंगले।।

निद्रे तन्द्रे क्षमे श्रद्धे तुष्टिपुष्टिस्वरूपिणी। लज्जे मेधे बुद्धिरूपे प्रसीद भक्तवत्सले।।

वेदस्वरूपे वेदानां कारणे वेददायिनी। सर्ववेदांगरूपे च वेदमातः प्रसीद मे।।

दये जये महामाये प्रसीद जगदम्बिके। क्षान्ते शान्ते च सर्वान्ते क्षुत्पिपासास्वरूपिणी।।

लक्ष्मीर्नारायणक्रोडे स्रष्टुर्वक्षसि भारति। मम क्रोडे महामाये विष्णुमाये प्रसीद मे।।

कलाकाष्ठास्वरूपे च दिवारात्रिस्वरूपिणी। परिणामप्रदे देवि प्रसीद दीनवत्सले।।

कारणे सर्वशक्तिनां कृष्णस्योरसि राधिके। कृष्णप्राणाधिके भद्रे प्रसीद कृष्णपूजिते।।

यशःस्वरूपे यशसां कारणे च यशःप्रदे। सर्वदेवीस्वरूपे च नारीरूपविधायिनी।।

समस्तकामिनीरूपे कलांशेन प्रसीद मे। सर्वसम्पत्स्वरूपे च सर्वसम्पत्प्रदे शुभे।।

प्रसीद परमानन्दे कारणे सर्वसम्पदाम्। यशस्विनां पूजिते च प्रसीद यशसां निधे।।

आधारे सर्वजगतां रत्नाधारे वसुन्धरे। चराचरस्वरूपे च प्रसीद मम मा चिरम्।।

योगस्वरूपे योगीशे योगदे योगकारणे। योगाधिष्ठात्रि देवीशे प्रसीद सिद्धयोगिनी।।

सर्वसिद्धस्वरूपे च सर्वसिद्धिप्रदायिनी। कारणे सर्वसिद्धीनां सिद्धेश्वरि प्रसीद मे।।

व्याख्यानं सर्वशास्त्राणां मतभेदे महेश्वरि। ज्ञाने यदुक्तं तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि।।

केचिद् वदन्ति प्रकृतेः प्राधान्यं पुरुषस्य च। केचित्तत्र मतद्वैधे व्याख्याभेदं विदुर्बुधाः।।

महाविष्णोर्नाभिदेशे स्थितं तं कमलोद्भवम्। मधुकैटभौ महादैत्यौ लीलया हन्तुमुद्यतौ।।

दृष्ट्वा स्तुतिं प्रकुर्वन्तं ब्रह्माणं रक्षितुं पुरा। बोधयामास गोविन्दं विनाशहेतवे तयोः।।

नारायणस्त्वया शक्त्या जघान तौ महासुरौ। सर्वेश्वरस्त्वया सार्धमनीशोऽयं त्वया विना।।

पुरा त्रिपुरसंग्रामे गगनात् पतिते मयि। त्वया च विष्णुना सार्धं रक्षितोऽहं सुरेश्वरि।।

अधुना रक्ष मामीशे प्रदग्धं विरहाग्निना। स्वात्मदर्शनपुण्येन क्रीणीहि परमेश्वरि।।

मंत्र- 'ॐ नमः प्रकृत्यै'

प्रकृति बोली- महादेव! आप धैर्य धारण करें। प्रभो! आप मेरे लिये प्राणों से भी बढ़कर प्रिय हैं। योगीश्वर आप ही आत्मा तथा जन्म-जन्म में मेरे स्वामी हैं। महेश्वर! मैं पर्वतराज हिमालय की भार्या मेनका के गर्भ से जन्म लेकर आपकी पत्नी बनूंगी, अतः आप इस विरह को त्याग दिजिये। इस प्रकार शिव को आश्वासन देकर प्रकृति देवी अन्तर्धान हो गयीं और देवता भी शिव को सांत्वना देकर चले गये। इसके बाद शिव कैलास पर्वत पर चले गये और शीघ्र ही विरहज्वर को त्यागकर अपने गणों के साथ प्रसन्नता से नाचने लगे।

जो मनुष्य शिव द्वारा किये गये इस प्रकृति के स्तोत्र का पाठ करता है, उसका प्रत्येक जन्म में अपनी पत्नी से कभी वियोग

नहीं होता। इहलोक में सुख भोगकर वह शिवलोक में चला जाता है तथा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारो पुरुषार्थों को प्राप्त कर लेता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana